# श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

## ॥ श्री गीत गोविंद॥

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो,
दर पे सुदामा गरीब आ गया है।

ना सिर पे हैं पगड़ी, ना तन पे हैं जामा
बतादो कन्हैया को नाम है सुदामा।
इक बार मोहन से जाकर के कहदो,
मिलने सखा बचपन का आ गया है॥

सुनते ही दोड़े चले आये मोहन,
लगाया गले से सुदामा को तत्क्षण।
हुआ रुक्मिणी को बहुत ही अचम्भा,
अद्भुत ये कैसा अतिथि आ गया है॥

सुदामा को अपने बराबर  बैठाए,
चरण आंसुओं से प्रभु ने धुलाये।
न सकुचाओ प्यारे मित्र तुम सुदामा,

जीवन में नव सूर्य उदय हो गया है।

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो,

दर पे सुदामा गरीब आ गया है।

## ॥ गीतम् 18 ॥

(अथ अष्टादशप्रबन्धो गुर्जरीरागेण रूपकताले गीयते)

हरिरभिसरति वहति मधुपवने ।

किमपरमधिकसुखं(म्) सखि भुवने ॥

माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ॥ 1॥

तालफलादपि गुरुमतिसरसम् ।

किं(वँ) विफलीकुरुषे कुचकलशम् ॥ 2॥ माधवे

कति न कथितमिदमनुपदमचिरम् ।

मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम् ॥ 3॥ माधवे

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।

विहसति युवतिसभा तव सकला ॥ 4॥ माधवे

मृदुनलिनीदलशीतलशयने ।

हरिमवलोकय सफलय नयने ॥ 5॥ माधवे

जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ।
शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ॥ 6॥ माधवे

हरिरुपयातु वदतु बहुमधुरम् ।
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम् ॥ 7॥ माधवे

श्रीजयदेवभणितमतिललितम् ।
सुखयतु रसिकजनं(म्) हरिचरितम् ॥ 8॥ माधवे